

निष्पक्ष, निर्भीक, स्वतंत्र आवाज...

वर्ष - 03 अंक - 55 बेमेतरा, रविवार 11 अक्टूबर 2026 रायपुर एवं बेमेतरा से प्रकाशित कुल पेज - 08 मूल्य - 1 रूपये डाक पंजीयन- दुर्गा/1743290201/2025-27

मुद्दों को लेकर विरोध दर्ज कराया गया। प्रदर्शन में कांग्रेस, सीपीआई, सीपीएम, समाजवादी पार्टी, आप एवं सिविल सोसाइटी के बुद्धिजीवी वर्ग के नागरिक शामिल हुए।

संपादकीय

देश के कई हिस्सों में हो रहे विरोध-प्रदर्शनों और संदेहों के बीच चुनाव आयोग ने ‘स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन’ (एसआईआर) के तहत एक विशेष अभियान शुरू करने का फैसला लिया है। चुनाव आयोग ने स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन यानी एसआईआर को लेकर विशेष अभियान शुरू करने का फैसला ऐसे समय लिया है, जब उसके खिलाफ देश के कई हिस्सों में विरोध-प्रदर्शन हो रहे हैं। उसके

कई फैसलों को संदेह की नजर से देखा जा रहा है और आयोग को बार-बार स्पष्टीकरण देना पड़ रहा है।सूचियों का मिलान। अभियान के तहत बीएलओ मौजूदा मतदाता सूची का एसआईआर से पहले की सूची से मिलान करेंगे। जिनके नाम पहले थे, पर अब नहीं हैं, उनकी स्थिति घर-घर जाकर जांची जाएगी। चुनाव आयोग और राज्य के चुनाव अधिकारियों के डेटा के मुताबिक, एसआईआर प्रक्रिया के बाद 9 राज्यों और

3 केंद्र शासित प्रदेशों में मतदाताओं में 10.2 प्रतिशत की कमी आई है।बताया जा रहा है कि करीब 13 करोड़ नाम कटे हैं। हालांकि ऐसा नहीं है कि ये सारे लोग योग्य थे और गलत तरीके से बाहर किए गए। 60 लाख से ज्यादा तो ऐसे मतदाताओं के नाम हटे हैं, जिनकी मौत हो चुकी है। आयोग ने हर राज्य में प्रक्रिया पूरी होने के बाद बताया था कि कहां कितने मृत, डुप्लिकेट या स्थानांतरित नाम हैं। लेकिन, संख्या को

लेकर बार-बार विवाद हो रहा है। नई और पुरानी, दोनों वोटर लिस्ट के मिलान से पता चलने की उम्मीद है कि कोई वास्तविक नाम तो नहीं छूटा। चुनाव आयोग को इस दर्शन (फिलॉसफी) पर काम करना चाहिए कि एक भी योग्य मतदाता अपने अधिकार से वंचित न रह जाए। अगर प्रक्रिया जटिल है, तो इसका नुकसान जनता को नहीं होना चाहिए। हर बीएलओ को एक सप्ताह में 20 से 25 मतदाताओं तक पहुंचने का निर्देश

दिया गया है। एक महीने में वेरिफिकेशन का काम पूरा होने की उम्मीद लगाई जा रही है। अगले साल कई राज्यों में होने वाले चुनावों को देखते हुए एक समय सीमा निर्धारित करना बेहद जरूरी है। ये सारे मुद्दे और विवाद विधानसभा चुनावों की प्रक्रिया शुरू होने के पहले तक सुलझ जाने चाहिए। यह ठीक नहीं होगा कि जब चुनाव चल रहे हों, तब आयोग की विश्वसनीयता पर अंगुलियां उठ रही हों। इससे आखिरकार संस्था और

लोकतंत्र का नुकसान है। विशेष अभियान आयोग के लिए मौका है, जब वह सारे सवालों के जवाब दे सकता है। इसके लिए जरूरी है कि पूरी पारदर्शिता रखी जाए। अगर कोई योग्य नाम पुरानी सूची में था और नए में जगह नहीं पा सका, तो उसके पीछे का कारण भी सामने आना चाहिए। यह अच्छा है कि लिस्ट को मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के बृथ लेवल एजेंट के साथ शेयर किया जाएगा।

अब तक विरोधियों से ताकत पाते रहे प्रधानमंत्री मोदी क्या चक्रव्यूह तोड़ पाएंगें?

(प्रो. संजय द्विवेदी)
ऐसा लगता है कि सुशासन, विकास और संवाद तीन स्तरों से सत्ता ने सब कुछ साध लिया है। आलोचना हर सरकार की होती है, होनी भी चाहिए। कहीं कुछ भी पूर्ण नहीं है। किंतु दिल्ली में 2014 के बाद आई सरकार ने न सिर्फ अपनी धमक बनाई वरन बदलता हुए हिंदुस्तान भी दिखा। यह अलग ही हिंदुस्तान था। मोदी है तो मुर्माकिन है- यह सिर्फ नारा नहीं है, भरोसा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने 25 सालों के सत्ताकाल में इसे अर्जित किया है। चुनावों में इस भावना को ‘मोदी की गारंटी’ कहा गया। यही विचार था जो मोदी को संगठन और विचार से बड़ा बना देता है। आज मोदी एक विचार बन चुके हैं। वह विचार है सबको साथ लेकर इस देश को विकसित भारत बनाने का सपना। इस मायने में वे सपनों के सौदागर भी हैं। अच्छे दिन आने वाले हैं से लेकर सबका साथ, सबका विकास, सबका प्रयास, सबका विश्वास तक यह सातत्य दिखता है। यह बिल्कुल नई राजनीतिक संस्कृति है और उसका सतत विकास है।

सुशासन, विकास और संवाद है मंत्र
ऐसा लगता है कि सुशासन, विकास और संवाद तीन स्तरों से सत्ता ने सब कुछ साध लिया है। आलोचना हर सरकार की होती है, होनी भी चाहिए। कहीं कुछ भी पूर्ण नहीं है। किंतु दिल्ली में 2014 के बाद आई सरकार ने न सिर्फ अपनी धमक बनाई वरन बदलता हुए हिंदुस्तान भी दिखा। यह अलग ही हिंदुस्तान था। जो आकांक्षाओं से भरा-पूरा था। अवसाद की चादर को फेंक कर कुछ करना चाहता था। आगे बढ़ना चाहता था। मोदी ऐसे हैं जिन्होंने राजनीतिक तंत्र और नेताओं की इज्जत थोड़ी बढ़ाई ही है। इसके पूर्व का समय याद करें तो वह ‘नीतिगत जड़ता’ का समय था, घोटालों की खबरें से हलकाान देश भ्रष्टाचार के विरुद्ध सड़कों पर था। दिल्ली में एक नई बनी पार्टी (आप) सत्ता में चुकी थी। तभी मोदी उम्मीदों का चेहरा बनकर उभरें और लोगों ने उनमें राष्ट्रनायक की छवि देखी। उनका साधारण अतीत भरोसा दे रहा था कि उन्हें लोगों के दर्द पता है और वे संकटों के ठोस और वाजिब हल निकालेंगे। इस भरोसे ने तीन बार उन्हें केंद्र की सत्ता पर न सिर्फ बिठाया बल्कि तमाम राज्यों में भी भाजपा और राजग की सरकारें बनीं, जिन्हें डबल इंजन की सरकार कहकर संबोधित किया गया। अति आत्मविश्वास से बचने की जरूरत गुजराने और दिल्ली के ‘सत्ता साकेत’ में लगभग ढाई दशक पूरे कर चुके नरेंद्र मोदी और उनकी सरकार को लेकर इस समय विपक्ष



और समाज के कुछ हिस्से हमलावर हैं। कुछ मुद्दे तो खुद उनकी सरकार ने दिए तो कुछ विपक्ष प्रायोजित विवाद भी हैं। जिसमें पेपरलीक, एनटीए की नाकामी, इथेनाल और चुनाव आयोग जैसे मुद्दे हैं। नरेटिव की जंग में मोदी का मुकाबला नहीं, किंतु हर बार ऐसा नहीं होता। कई बार अतिआत्मविश्वास भी नुकसानदायक होता है। जनता सब कुछ कर सकती है, किंतु अहंकार स्वीकार नहीं करती। सच तो यह है कि विपक्ष के बिखराव और आपसी खींचतान के बाद भी सरकार न तो सदन चला पाई न सामने से उतर रहे सवालों के उत्तर दे पाई। ऐसे में सवाल यह उठता है कि क्या मोदी थक गए हैं या वे घिर गए हैं?

सच्चाई तो यह है कि मोदी और उनकी पार्टी के संगठन का मुकाबला करने की स्थिति में इस समय कोई दल या राजनीतिक समूह नहीं है। भाजपा अब पुरानी पार्टी नहीं रही। इस दौर में उनका जो भौगोलिक और सामाजिक विस्तार हुआ है, वह अभूतपूर्व है। इसके भरोसे ही वह तीन बार केंद्रीय सत्ता में आ सकी, जिसमें दो बार उसे पूर्ण बहुमत मिला तो तीसरी बार भी उसने आत्मविश्वास से भरकर सहयोगियों के साथ सरकार बना ली। सत्ता विरोधी रूझान के बाद भी भाजपा का मुख्य प्रतिद्वंद्वी दल कांग्रेस 100 सीटों का आंकड़ा पार नहीं कर सका। बावजूद इसके इस चुनाव परिणाम से विपक्ष में यह भरोसा तो बना कि भाजपा के अश्वमेघ के रथ को रोका जा सकता है।

बंगाल की जीत ने दिया भरोसा – अल्पमत की सरकार होने के बाद भी केंद्र की सरकार भरोसे से भरी है। बड़े फैसले हो रहे हैं। बंगाल के चुनावों की असंभव सी दिख रही जीत ने भाजपा के काउंड में

आत्मविश्वास भरा है। इस भरोसे में असम की जीत तो संयुक्त है ही। अब पंजाब और उत्तर प्रदेश के मैदान में डटी भाजपा को यह साबित करना है कि अभी वह चुकी और थकी नहीं है। पंजाब में बहुत कमजोर खिलाड़ी होकर भी वह मैदान को जीतने के लिए जिस तरह उतरी है, वह बात साबित करती है कि उसका यह भरोसा अकारण तो बिल्कुल नहीं है। नई नवेली आम आदमी पार्टी की सरकार वहां (पंजाब में) दूसरे संघर्ष में बन सकती है तो कोई कारण नहीं भाजपा भी ऐसे स्वप्न देखे। वहीं उत्तर प्रदेश में तो उसके पास योगी आदित्यनाथ जैसा फायर बॉड लीडर है, जिसके पास 10 सालों का सुनहरा अतीत है। सरकार के नेता पर कोई दाग नहीं है, गुंडों पर लगाम है, सरप्लस एकोनामी है। यानी उत्तर प्रदेश में बहुत कुछ बदल गया है। भौगोलिकसंदर्भ

सामाजिक समरसता पर संकट – फिर क्या कारण हैं कि नरेंद्र मोदी को लेकर तरह-तरह की बातें हो रही हैं। कई जातीय समूह उन पर हमलावर हैं। जबकि इन समूहों द्वारा उठाए जा रहे आरक्षण जैसे विषयों पर राजनीतिक दलों की आम सहमति है। कोई दल इस विषय को छू नहीं सकता। ‘समीक्षा’ जैसे शब्द पर भी राजनीतिक दल कांप उठते हैं। इस विषय पर मोदी निशाने पर हैं। हालांकि यह ज्यादातर जंग आनलाईन माध्यमों पर ही लड़ी जा रही है किंतु समाज में इसका जहर नहीं फैल रहा है, यह कहना गलत होगा। इस बीच यूजीसी गाइडलाइंस ने अलग कबाड़ा किया। इससे मोदी विरोधियों को आग उगलने का मौका मिला। यह तो भला हो सुप्रीम कोर्ट का कि उसने इन प्रावधानों को रोककर सरकार की लाज बचा ली। सामाजिक समरसता के

लिए यह सारे विवाद घातक हैं, किंतु राजनीति का लक्ष्य संधान अगर समाज को बांटकर ही होता हो तो क्या किया जा सकता है? इसके साथ ही शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान को लंबे समय तक झेलते रहना भी सरकार के विरुद्ध गया, अंततः प्रधान तिलचट्टों की अनावश्यक सस्ती राजनीति के शिकार होकर विदा हो गए। इससे गुमनाम और जनाधारहीन नई नवेली ‘काक्रोच जनता पार्टी’ अनावश्यक चर्चा में आ गयी।

इस सबके बाद भी मोदी और भाजपा की शक्ति को कम आंकना गलत होगा। योगी आदित्यनाथ, हेमंत विश्वशर्मा, शुभेंदु अधिकारी, मोहन यादव, विष्णुदेव साय, नायब सिंह सैनी, मोहन मांझी, देवेन्द्र फड़नवीस, सम्राट चौधरी जैसी मुख्यमंत्रियों की टीम को कम आंकना नासमझी होगी। नरेंद्र मोदी ने देश के हर क्षेत्र में सभी सामाजिक समूह के नेताओं की पूरी मलिका खड़ी कर दी है। भाजपा के इस सामाजिक विस्तार को समझे बिना आप मोदी की ताकत को नहीं भांप सकते। इसी तरह भाजपा का भौगोलिक विस्तार अप्रतिम है।

उत्तर प्रदेश में होगा देश का फैसला – भाजपा ‘मोदी समय’ में जम्मू से लेकर कन्याकुमारी तक की लोकसभा सीटें जीत चुकी है। भुवनेश्वर से लेकर मुंबई तक भाजपा की तूती बोल रही है। कांग्रेस और विपक्षी दलों के भरसक प्रयासों के बाद भी मोदी देश की जनता की पहली पसंद बने हुए हैं। सरकार के विरुद्ध असंतोष को वे कैसे समाप्त करते हैं, इसकी पहली बड़ी परीक्षा उत्तर प्रदेश के चुनाव मैदान में होनी है। वहां के परिणाम देश की राजनीति को प्रभावित करेंगे। कई विश्लेषक और ज्योतिष गुरु नरेंद्र मोदी को राष्ट्रपति भवन भेजने और किसी अन्य को प्रधानमंत्री बनाने में लगे हैं, किंतु ऐसा लगता है कि नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा स्वयं को ज्यादा आश्चस्त पाती है। प्रधानमंत्री की सक्रियता और दिनचर्या को देखते हुए यह कहना कठिन है कि वे अभी आसानी से हथियार डाल देंगे। संगठन और सरकार पर उनकी पकड़ मजबूत है। आज तक विपक्षियों के द्वारा हुए व्यापक विरोध से ही वे शक्ति अर्जित करते रहे हैं। नए समय में हो रहा विरोध क्या उन्हें फिर से शक्तिमान बनाएगा, इसके लिए उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनावों के परिणामों का इंतजार करना पड़ेगा। उत्तर प्रदेश का राजनीतिक संदेश देश की भावी दिशा तय करेगा, इसमें दो राय नहीं है। सरकारीएजेंसियां(लेखक राजनीतिक विश्लेषक हैं।)(इस लेख में लेखकों के अपने विचार हैं।)

इस नवरात्रि में कैसे करें मानस दर्शन

नवरात्रि में माँ भगवती की आराधना के साथ श्रीरामचरितमानस के माध्यम से अपने अंतर्मन का दर्शन

इस नवरात्रि में करें अपने मन का दर्शन जय माता दी
आज से समूचा विश्व शक्ति की आराधना के साथ पावन पर्व नवरात्रि में भक्ति साधना के साथ जुड़ जाये। नवरात्रि नौ दिनों की पूजा तक सीमित नहीं है, बल्कि हमारे जीवन की दिशा बदलने का सामर्थ्य रखता है। हम नवरात्रि में माँ भगवती का दर्शन तो करते हैं, लेकिन क्या कभी अपने मन का दर्शन करने का प्रयास किए है हम मंदिर जाते हैं, ज्योति जलते हैं, नारियल चढ़ाते हैं, माता की आरती करते हैं और अपनी मनोकामनाएँ माँ के चरणों में रखते हैं। यह हमारी श्रद्धा है, हमारी आस्था है। लेकिन जरा विचार कीजिए—जिस मन में क्रोध का अंधकार हो, जिस हृदय में अहंकार का निवास हो, जिस वाणी से दूसरों को पीड़ा पहुँचती हो, क्या उस मन को निर्मल किए बिना हमारी साधना पूर्ण हो सकती है? यहाँ से आरंभ होता है मानस दर्शन। मानस दर्शन अर्थात श्रीरामचरितमानस के माध्यम से अपने जीवन, अपने विचारों, अपने व्यवहार और अपने अंतर्मन को देखने का प्रयास। गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस में केवल भगवान श्रीराम की कथा नहीं कही, बल्कि मनुष्य को मनुष्य बनाने वाली जीवन-द्रष्टि भी प्रदान की है। **अपने भीतर की शक्ति को पहचानें** – नवरात्रि शक्ति की उपासना का पर्व है। माँ दुर्गा की आराधना हमें यह प्रेरणा देती है कि जीवन में

उपरिस्थित आसुरी प्रवृत्तियों से संघर्ष करें। लेकिन हमारे भीतर भी अनेक विकार हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर—ये हमारे अंतर्मन की ऐसी चुनौतियाँ हैं, जो हमारी शांति और विवेक को कमजोर करती हैं। इसलिए इस नवरात्रि में हम संकल्प लें कि प्रतिदिन माँ भगवती की आराधना के साथ अपने भीतर के किसी एक विकार को पहचानने और उसे दूर करने का प्रयास करेंगे। यदि क्रोध अधिक है, तो क्षमा का अभ्यास करेंगे। यदि अहंकार अधिक है, तो विनम्रता अपनाएँगे। यदि मन में ईर्ष्या है, तो दूसरों की सफलता में प्रसन्न होना सीखेंगे। यदि किसी के प्रति द्वेष है, तो प्रेम और सद्भाव का मार्ग चुनेंगे। क्योंकि सच्ची साधना केवल हाथ जोड़ना नहीं, अपने स्वभाव को जोड़ना भी है। **श्रीरामचरितमानस को केवल पढ़ें नहीं, अपने जीवन में उतारें** – श्रीरामचरितमानस में भगवान श्रीराम का जीवन हमें मर्यादा, करुणा, त्याग, कर्तव्य और लोकमंगल की शिक्षा देता है। जब हम बालकांड का दर्शन करते हैं, तो हमें संस्कार और आदर्श जीवन की प्रेरणा मिलती है। अयोध्याकांड हमें त्याग, वचनपालन और पारिवारिक मर्यादा का संदेश देता है। अरण्यकांड हमें विपरीत परिस्थितियों में धैर्य बनाए रखने की प्रेरणा देता है। किष्किंधाकांड हमें मित्रता, सहयोग और विश्वास का महत्त्व समझाता है।



सुंदरकांड हमें हनुमान जी के माध्यम से सेवा, समर्पण, साहस और प्रभु के प्रति अटूट विश्वास का मार्ग दिखाता है। लंकाकांड हमें अधर्म पर धर्म की विजय का संदेश देता है। और उत्तरकांड हमें आदर्श जीवन, लोककल्याण तथा मर्यादित आचरण की प्रेरणा देता है। अब प्रश्न यह है कि मानस का यह ज्ञान हमारे जीवन में कहाँ दिखाई देता है? क्या हमारे परिवार में प्रेम बढ़ रहा है? क्या हमारे व्यवहार में विनम्रता आ रही है? क्या समाज के प्रति हमारा उत्तरदायित्व बढ़ रहा है?

क्या हम किसी दुखी व्यक्ति के आँसू पोंछने का प्रयास कर रहे हैं? यदि इन प्रश्नों के उत्तर में सकारात्मक परिवर्तन दिखाई देता है, तो समर्पण की मानस का दर्शन हमारे जीवन में उतरने लगा है। मानस का सच्चा दर्शन तभी है, जब चौपाइयों का ज्ञान हमारे आचरण में दिखाई देने लगे। **माँ भगवती की आराधना और रामजी की मर्यादा** – हमारे लिए माँ भगवती शक्ति का स्वरूप हैं और भगवान श्रीराम मर्यादा के आदर्श हैं। शक्ति हमें सामर्थ्य प्रदान करती है और मर्यादा उस सामर्थ्य का सदुपयोग करना सिखाती है। सामर्थ्य हो, लेकिन अहंकार न हो। ज्ञान हो, लेकिन अभिमान न हो। धन हो, लेकिन दानशीलता भी हो। पद हो, लेकिन सेवा का भाव भी हो। वाणी में प्रभाव हो, लेकिन शब्दों में मधुरता भी हो। यही वह संतुलन है, जिसकी शिक्षा हमें भक्ति और मानस के समन्वित चिंतन से मिलती है। इस नवरात्रि में हम माँ भगवती से केवल सुख-सुविधाएँ न माँगें, बल्कि ऐसी बुद्धि भी माँगें, जिससे हम अपने कर्तव्यों को समझ सकें। हम ऐसी शक्ति माँगें, जिससे निर्बल का सहारा बन सकें। हम ऐसा हृदय माँगें, जिसमें समस्त जीवों के प्रति करुणा हो। और ऐसी वाणी माँगें, जिससे किसी के हृदय को ठेस न पहुँचे।

नौ दिन, नौ संकल्प

इस नवरात्रि को केवल उत्सव नहीं, आत्मपरिवर्तन का अवसर बनाएँ। प्रथम दिवस—श्रद्धा का संकल्प। अपने आराध्य के प्रति विश्वास और अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठा रखें। द्वितीय दिवस—संयम का संकल्प। अपने विचारों, वाणी और व्यवहार पर नियंत्रण रखने का प्रयास करें। तृतीय दिवस—करुणा का संकल्प। किसी जरूरतमंद की सहायता करें और दूसरों के दुःख को समझें। चतुर्थ दिवस—सेवा का संकल्प। बिना किसी स्वार्थ के समाज और परिवार के लिए कुछ करें। पंचम दिवस—विनम्रता का संकल्प। अपनी उपलब्धियों पर अहंकार न करें और दूसरों का सम्मान करें। षष्ठम दिवस—सत्य का संकल्प। अपने आचरण में ईमानदारी और व्यवहार में पारदर्शिता रखें। सप्तम दिवस—धैर्य का संकल्प। विपरीत परिस्थितियों में भी विवेक और विश्वास बनाए रखें। अष्ठम दिवस—क्षमा का संकल्प। मन में पल रहे द्वेष को कम करें और संबंधों में मधुरता लाने का प्रयास करें। नवम दिवस—समर्पण का संकल्प। अपने अच्छे कर्मों को प्रभु के चरणों में समर्पित करें और लोककल्याण के लिए कार्य करें। इन नौ दिनों में यदि हम अपने भीतर थोड़ा-सा भी सकारात्मक परिवर्तन ला सकें, तो नवरात्रि

हमारे लिए वास्तविक साधना का पर्व बन सकती है। आइए, इस नवरात्रि में हम माँ भगवती के चरणों में प्रार्थना करें— हे माँ! हमें केवल पूजा करने वाला नहीं, सद्कर्म करने वाला बनाइए। हमें केवल मानस सुनने वाला नहीं, मानस के आदर्शों पर चलने वाला बनाइए। हमारे भीतर सेवा का भाव जगाइए, हमारी वाणी में मधुरता भरिए और हमारे हृदय में भगवान श्रीराम के प्रति अटूट श्रद्धा बनाए रखिए। अंत में, मैं यही कहना चाहता हूँ— मंदिर में माँ का दर्शन हो, हृदय में राम का वास हो। मानस से जीवन प्रकाशित हो, हर कर्म लोककल्याण के पास हो। आइए, इस नवरात्रि में हम माँ भगवती की आराधना के साथ श्रीरामचरितमानस के आदर्शों को अपने जीवन में उतारने का संकल्प लें। यही हमारी साधना हो, यही हमारी सेवा हो और यही हमारा मानस दर्शन हो। **जय माता दी!** **जय सिरायाम!** **श्री राम शरणम् मम** **सादर शुभकामनाओं सहित।**
देवलाल सिन्हा
अध्यक्ष
माँ भद्रकाली जिला मानस संघ, बेमेतरा

बेमेतरा पुलिस ने स्पष्ट किया है कि जिले में अवैध मादक पदार्थों की बिक्री, परिवहन और अन्य अपराधिक गतिविधियों के खिलाफ अभियान लगातार जारी रहेगा। पुलिस प्रशासन ने कानून-व्यवस्था बनाए रखने और नशे के अवैध कारोबार पर अंकुश लगाने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई है। बेमेतरा पुलिस का संदेश: ÷ अब नहीं बख़्शे जाएंगे अपराधी।÷

